# महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता

सुचि जैन
शोधार्थी,
राजनीतिक विज्ञान संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

डॉ. रश्मि सोमवंशी
शोध निर्देशक,
राजनीतिक विज्ञान संकाय,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

## शोध आलेख सार

यह शोध पत्र महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता पर आधारित है जो वर्तमान में इसके महत्व का विश्लेषण करता है। महात्मा गांधी के जीवन और संघर्ष के तरीके आज भी लोगों को प्रभावित करते हैं। महात्मा गांधी के विचार और आदर्श आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक हैं। न्यायपूर्ण, समतापूर्ण और दयालु समाज का उनका दृष्टिकोण एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह काम करता है। आज जब पूरा विश्व सीमापार आतंकवाद, अंतरराष्ट्रीय संघर्ष, युद्ध और हिंसा के अन्य रूपों जैसे मुद्दों से जूझ रहा है, हम वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गांधी के अहिंसा के दर्शन की प्रासंगिकता पर विचार कर रहे हैं। वे पूरी दुनिया में शांति, प्रेम, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, मौलिक शुद्धता और करुणा तथा इन उपकरणों के सफल प्रयोगकर्त्ता के रूप में याद किये जाते हैं, जिसके बल पर उन्होंने उपनिवेशवादी सरकार के खिलाफ पूरे देश को एकजुट कर आजादी की अलख जगाई। आज दुनिया के किसी भी देश में जब कोई शांति मार्च निकलता है या अत्याचार व हिंसा का विरोध किया जाता है या हिंसा का जवाब अहिंसा से दिया जाना हो, तो ऐसे सभी अवसरों पर पूरी दुनिया को गांधी याद आते हैं। अतः यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि गांधी के राजनीतिक विचार कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं तथा आने वाले समय में भी रहेंगे।

**मुख्यशब्द– महात्मा गांधी, आदर्श, राजनीतिक, प्रासंगिकताए वर्तमान परिदृश्य**

## प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा सामाजिक प्राणी होने के नाते वह कैसे अपना जीवन व्यापन करे, उसकी आवश्यकताओं के लिए उसे कौने से संसाधन उपलब्ध होंगे, वह कैसे इन संसाधनों का प्राप्त करेगा, कौन उसे यह संसाधन उपलब्ध करायेगा, इत्यादि महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनके सम्बन्ध में सहमति असहमति और सहयोग और संघर्ष देखने को मिलता है। इन्हीं मानवीय अन्तः क्रिया को सामान्य अर्थों मे राजनीति

कहा जाता है। राजनीति का सबसे वृहद स्वरूप में नियम या कानून बनाने की क्रिया सम्मिलित की जाति हैं। प्रायः यह माना गया है कि मनुष्य और समाज का हित स्वच्छन्दतापूर्ण व्यवहार से आहत होता है। इसलिए मानवीय व्यवहार के कुछ नियम–कायदे होने चाहिए। इन नियमों का आधार विवेक है और उद्देश्य मनुष्य का कल्याण है। इसके निमार्ण, संशोधन और संचालन सम्बन्धी गतिविधियों नें आम सहमति और सामूहिक सहभागिता अन्य महत्वपूर्ण आधार है।

विश्व पटल पर महात्मा गाँधी का अभ्युदय एक महान घटना है। गाँधीजी को दो रूपों में जाना जाता है– राजनेता एवं अध्यात्मवेत्ता। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण मे ंप्रमुखतः दो बातों की भूमिका होती है– अन्तःचेतना एवं प्रवर्तित परिस्थितियाँ। अन्तःचेतना स्वतः स्फूर्ती होती है। इस आधार पर होने वाले व्यक्तित्व निर्माण के लिये पृथक प्रयासों की आवश्यकता नहीं होती। इसका निर्माण पेड़ों पर पत्तियाँ आने के सदृश स्वाभाविक होता है। इस कारण इसमें कृत्रिमता नहीं होती यह शाश्वत होता है। दूसरी ओर देश काल की विद्यमान परिस्थितियाँ व्यक्ति को कुछ विशिष्ट आचरण हेतु प्रेरित/विवश करती है। इसके लिये व्यक्ति कुछ खास प्रयास करता है, संभव है इस निमित्त किया गया आचरण व्यक्ति के मौलिक स्वभाव से कुछ विचलित हो सकता है। वैशिष्ट्य एवं संस्कारित होने के कारण इसमें कृत्रिमता रहती है और इस कारण यह चिरन्तन हो, ऐसा आवश्यक नहीं। किन्तु महापुरूषों में यह सामान्य लक्षण होता है कि वे परिस्थितिवश उठाये गये कदमों में भी भरपूर संयम का बर्ताव करते है, इस कारण ऐसे आचरण में भी वे किसी सीमा तक अपने स्वाभाविक गुणों की छाप छोड़नें में सफल रहते है। गाँधीजी के संदर्भ में इसे देखा जाये तो सत्य, अहिंसा संबंधी मौलिक सद्गुण उनमें स्वाभाविक रूप से विद्यमान थे। इन मौलिक सद्गुणों का प्रयोग उन्होनें कृत्रिम रूप से स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा, नमक कानून को भंग करना, भारत छोडो आंदोलन, करो या मरो का नारा एवं स्वतंत्रता के समय गाँधीजी का आचरण के रूप मे ंकिया। गाँधीजी ने अपने लंबे राजनीतिक जीवनकाल में अपने चरित्र के मौलिक गुणों पर सामान्यतः प्रवर्तित परिस्थितियो ंको हावी नहीं होने दिया और राजनीतिक स्वतंत्रता आंदोलन को अपने अन्तर्मन की आवाज के अनुरूप चलाने का सफल प्रयोग किया। यह गुण उनकी महात्मा की उपाधि को चरितार्थ कर देता है।

## साहित्य की समीक्षा

**वर्मा डॉ. एस. एल., मिश्रा डॉ. मधु, ''महात्मा गाँधी एवं धर्मनिरपेक्षता'', 2014,** पुस्तक राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक के अंतगर्त धर्म, धर्माचार एवं धर्मान्तर्गत लौकिकता, धर्मनिरपेक्षतावाद का अर्थ, प्रकृति, सामर्थ्य एवं संभावना, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का चिंतन, इसके आधार, लक्ष्य एवं साधन, महात्मा गाँधी का कर्मक्षेत्र दक्षिण अफ्रीका एवं भारत के आंदोलन, सामाजिक,

राजनीतिक एवं आर्थिक आंदोलेनों के संदर्भ में गाँधीजी के नेतृत्व प्रतिमान आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

**बाथोनिया शेफाली, ''महात्मा गाँधी एवं विश्व'', 2018,** पुस्तक के अंतगर्त गाँधी दर्शन की मूल अवधारणाओं में सत्य–अहिंसा की अवधारणा, अहिंसा का स्वरूप, अहिंसा एवं विश्व राजनीति, अहिंसा के गुण–दोष, साध्य–साधन की अवधारणा, नैतिकता, धर्म, व्यक्ति, राज्य का विस्तृत विवेचन है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधो के सैद्धांतिक प्रश्नों पर गाँधी चिंतन को इसमें दर्शाया गया है, जिसमें गाँधी एवं अंतर्राष्ट्रीयतावाद प्रमुख हैं। युद्ध, शांति, हिंसा, जातिवाद, रंगभेद आदि के संदर्भ मे ंस्पष्ट वर्णन किया गया है। समकालीन अंतर्राष्ट्रीय प्रश्न व गाँधी, अंतर्राष्ट्रीय विश्व में गाँधी, वर्तमान युग में गाँधीजी की प्रासंगिकता आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

**आचार्य नन्दकिशोर, ''सत्यागह की संस्कृति'', 2020,** यह पुस्तक वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर द्वारा प्रकाशित है। इसके अंतगर्त सत्याग्रह को संस्कृति के रूप में देखा गया है। इसमें अहिंसा का आग्रह, साम्यवाद का विकल्प पूँजीवाद नहीं, आसक्ति और आनन्द का अन्तर, गाँधीवाद और राजसत्ता, महासागरीय वृत की राष्ट्रीय एकता, अहिंसा की सामाजिक प्रौद्योगिकी, सत्याग्रही राज्य, शिक्षा में सत्यागह , सत्याग्रही विकास की आवश्यकता, सत्याग्रही प्रौद्योगिकी की आवश्यकता, न्यासिता का व्यावहारिक व न्यायोचित रूप, गाँधीवाद गाँधी के बाद आदि बिन्दुओ ंपर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

**प्रभु आर. के., राव यू. आर., ''महात्मा गाँधी के विचार'', 2011,** नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में गाँधीजी के अपने स्वयं के बारे मे ंविचारो ंका वर्णन किया गया है। सत्य, अभय, आस्था का दिव्य संदशे, अहिंसा का दिव्य संदशे, अहिंसा की शक्ति, अहिंसा का प्रशिक्षण, हिंसा एवं आतंकवाद, आक्रमण का प्रतिरोध, अहिंसक मार्ग, सत्यागह का दिव्य संदशे, उपवास और सत्यागह, अपरिग्रह का दिव्य संदशे, श्रम संबंधी विचार, सवार्देय का दिव्य संदशे, न्यासिता का दिव्य संदेश, ब्रह्मचर्य का दिव्य संदशे, स्वतंत्रता और लोकतंत्र का दिव्य संदेश, स्वदेशी, भाईचारा संबंधी विचार, राष्ट्रवाद बनाम अंतर्राष्ट्रवाद, नस्लवाद, युद्ध और शांति, परमाणु युद्ध, शांति का मार्ग एवं कल की दुनिया आदि बिन्दुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

**पाण्डेय उपासना, ''उत्तर–आधुनिकता और गाँधी'', 2017,** पुस्तक के अंतगर्त आधुनिकतावाद एवं उत्तर–आधुनिकतावाद की अवधारणाओं का विवेचन किया गया है। गाँधी द्वारा की गई आधुनिकता की आलोचना, समकालीन विमर्श गाँधी पूर्व–आधुनिक, आधुनिक एवं उत्तर–आधुनिक विचारक के रूप में, सत्य एवं अहिंसा नवीन विश्व व्यवस्था की आधारशिला के रूप में, गाँधी दर्शन में सत्य व अहिंसा का तात्विक

दृष्टिकोण, धार्मिक दृष्टिकोण एवं नैतिक दृष्टिकोण, नवीन विश्व व्यवस्था के विभिन्न स्वरूप, राजनीति, अर्थनीति, धर्म, शिक्षा एवं स्त्री आदि।

**त्रिपाठी विनायक, ''आधुनिक गाँधी अन्ना हजारे'', 2012,** यह पुस्तक अन्ना हजारे के जीवन दर्शन पर आधारित है। जिसमे उनके संघर्षमय बचपन, अन्ना हजारे का ग्रमीण विकास मॉडल, सूचनाधिकार के प्रणेता, भारत मे भ्रष्टाचार की स्थिति, भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे, अन्ना हजारे और सोशल मीडिया, अन्ना का जन लोकपाल विधेयक, लोकपाल व जनलोकपाल विधेयक पर एक तुलनात्मक दृष्टि आदि बिन्दुओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

## अध्ययन के उद्धेश्य

- महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का मूल्यांकन करना।
- महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

## शोध–प्राविधि

यह अध्ययन वर्तमान की परिपेक्ष्य पर आधारित है जिसमें आंकड़े द्वितीयक समंक पर आधरित है। आंकड़ों का संकलन पत्रिका, इन्टरनेट, शोध पत्र, इन्टरनेट में उपलब्ध गांधी की जीवनी इत्यादि पर आधारित है।

## महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का मूल्यांकन

इस सदी में यदि कोई व्यक्ति ऐसा हुआ है, जिसने सम्पूर्ण विश्व को आदर्श का पाठ पढ़ाते हुए, उस आदर्श को स्वयं कार्यरूप में परिणित किया हो, जिससे सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हुआ हो, तो वह है– महात्मा गांधी। उन्होंने न केवल अपने विचारों की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया, अपितु यह भी बताया कि व्यावहारिक जीवन में उसे कैसे लागू करें। उनके विचार देशकाल व परिस्थितियों की सीमाओं में बंधे नहीं हैं, वे सासर्वभौमिक, सार्वकालिक एवं शाश्वत हैं।

राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में गांधी प्रायः सभी नेताओं से नितान्त भिन्न थे। वे राजनीतिज्ञों में महात्मा और महात्माओं में राजनीतिज्ञ, परम्परावादियों में आधुनिक और आधुनिकों में परंपरावादी, धार्मिकों में धर्मनिरपेक्ष और धर्मनिरपेक्षों में धार्मिक थे। उन्होंने समस्त मानवशास्त्रों को नीतिशास्त्र के अधीन किया और जीवन की सार्थकता सत्य के अन्वेषण में देखी। कथनी–करनी का अंतर गांधी के चिंतन में समाप्त हो जाता है। नैतिक मूल्यों को राजनीति में सम्मिलित करना गांधी की विशेषता है। गांधी ने अपनी राज्य संबंधी अवधारणा में रामराज्य या धर्मराज्य का जो वर्णन किया है, वह जनतंत्रीय राज्य ही है। गांधी ने जनतंत्र को

परिभाषित करते हुए कहा कि यह समाज के लिए सभी वर्गों के समस्त भौतिक और आध्यात्मिक साधनों को सबकी भलाई के लिए सगंठित करने की कला और विज्ञान है। उनका मानना था कि जनतंत्र वह है जिसमें दुर्बल व सबल सभी लोगों को समान अवसर प्राप्त हों।

गांधी जी के चिंतन में व्यक्ति को वही स्थान प्राप्त है, जो प्रजातंत्र में व्यक्ति को प्राप्त है। यदि प्रजातंत्र ऐसी शासन–पद्धति है, जो समाज के सभी व्यक्तियों को समानता के धरातल पर संगठित कर, उन्हें सर्वोच्च मंजिल तक पहुंचाती है, तो ऐसी पद्धति गांधी को अत्यन्त प्रिय है, लेकिन पश्चिमी प्रजातंत्रीय प्रणाली ऐसा करने में सर्वथा असमर्थ है। गांधीवाद जिस भावी समाज की कल्पना प्रस्तुत करता है, वह मुख्यतः जनतांत्रिक समाज है, वह वर्गहीन और जातिविहीन समाज है। इसे सर्वोदयी समाज कहा गया है। गांधी की मान्यता है कि मनुष्य का विकास हिंसा से अहिंसा की ओर हो रहा है, अतः बिना क्रांति के सर्वोदयी समाज का क्रमिक रूप में आविर्भाव होगा। उनके मतानुसार हमें अपने स्वराज्य की प्राप्ति सत व अहिंसा के मार्ग पर चलकर करना है और इन्हीं के द्वारा हमें उसे कायम रखना है। सर्वोदयी समाज सद्भावना और सहकारिता की भावना पर आधारित होगा। वह एक राज्यविहीन लोकतंत्र होगा। वह व्यवस्था आत्म–अनुशासन एवं आत्म–संयम की होगी, जिसमें राजनीतिक प्रशासन एवं आर्थिक शक्तियों का विकेन्द्रीकरण होगा। इस समाज में श्रम की प्रतिष्ठा होगी। संतोष एवं सादगी व्यक्ति के आभूषण होंगे। यहां मशीन के द्वारा मनुष्य को विस्थापित नहीं किया जायेगा। ऐसे समाज का प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक जीवन का निर्वाह स्वयमेव अपनी इच्छा से करता है तथा अपने कर्तव्यों का पालन भी स्वेच्छा से करता है। आत्मनियमन की स्थिति में व्यक्ति स्वयं अपना शासक है।

## महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों की वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता

गांधी के राजनीतिक विचारों से सबसे पहले, गांधी अकादमिक दृष्टि से व्यवस्था निर्माता नहीं थे। वे कोई राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे। क्योंकि उनके सभी कथन उनकी गहरी भावनाओं और सत्य की ईमानदारी से की गई अनुभूति से निकले थे। विवादों में पड़े बिना, यह माना जा सकता है कि वे किसी विशेष विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध नहीं थे। उनके भाषण और लेखनी आम तौर पर विशेष परिस्थितियों से उत्पन्न प्रतिक्रियाओं से निकले थे। गांधी ने अपने जीवन के अंतिम समय में भी अपने बारे में कहा कि उन्होंने कभी विकास करना बंद नहीं किया और इसलिए, वे ष्सत्य के साथ प्रयोगष से सीखते रहे, जैसा कि उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है। इस प्रकार गांधी ने समय–समय पर अपने विचारों को संशोधित किया, हालांकि उनकी वैचारिक रूपरेखा वही रही। उन्होंने अपनी मूल बातों में कोई बदलाव नहीं किया।

गांधी का राजनीतिक चिंतन पूर्वी और पश्चिमी, दोनों ही तरह की परंपराओं से उपजा है। हालांकि उन्हें कई परंपराएं विरासत में मिली थीं, लेकिन वे उनमें से किसी एक से सहमत नहीं थे। उन्होंने अपने तत्काल पूर्ववर्तियों के साथ–साथ प्राचीन ग्रंथों से भी कई पारंपरिक अवधारणाएं ली थीं। गांधी ने कभी भी एक मौलिक विचारक होने का दावा नहीं किया। लेकिन जब हम उनकी सभी बातों पर गौर करते हैं तो हमें एक वैचारिक रूपरेखा मिलती है, जो एक दार्शनिक के लिए समान होती है। इसके अलावा, जब हम पाते हैं कि उनके सैद्धांतिक सूत्रीकरण और व्यावहारिक प्रयास एक जैसे हैं, तो हमारे पास उन्हें भारतीय अर्थ में एक दार्शनिक के रूप में स्वीकार करने का हर कारण है। लेकिन पूर्व और पश्चिम दोनों के अन्य दार्शनिकों और राजनीतिक वैज्ञानिकों के विपरीत, केवल वे ही न केवल राष्ट्र के भाग्य के व्यक्ति के रूप में उभर सकते थे, बल्कि सहस्राब्दी के व्यक्ति के रूप में भी उभर सकते थे। महात्मा गांधी के विचार और आदर्श आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक हैं। न्यायपूर्ण, समतापूर्ण और दयालु समाज का उनका दृष्टिकोण एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह काम करता है।आज जब पूरा विश्व सीमापार आतंकवाद, अंतरराष्ट्रीय संघर्ष, युद्ध और हिंसा के अन्य रूपों जैसे मुद्दों से जूझ रहा है, हम वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गांधी के अहिंसा के दर्शन की प्रासंगिकता पर विचार कर रहे हैं। गांधीजी ने न केवल देश को पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया, बल्कि जातिवाद, धार्मिक मतभेद, आर्थिक असमानता और लैंगिक पूर्वाग्रह जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त एक नए भारत की नींव भी रखी।

गांधीजी का जन्म भारत में हुआ था, लेकिन उनका नाम सभी महाद्वीपों के लोगों के मन में गूंजता है। उनके द्वारा अपनाए गए मूल्यों और सिद्धांतों को दुनिया के हर हिस्से में संजोया और सम्मानित किया जाता है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा से लेकर मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला, हो ची मिन्ह और दलाई लामा जैसे विश्व नेता खुद को गांधीजी की विचारधारा के प्रबल समर्थक मानते हैं। एक दूरदर्शी होने के नाते, महात्मा गांधी अहिंसा, सत्याग्रह (भूख हड़ताल) और धीरज द्वारा लाई गई क्रांति के प्रेरणास्रोत थे। यह दर्शन कितना सच है – अतीत आपके दिमाग में है लेकिन भविष्य आपके हाथ में है। हमारे कार्य हमारे भविष्य को निर्धारित करेंगेय आज हम जो चुनाव करेंगे, वह भविष्य में घटनाओं की प्रगति को स्थापित करेगा। हम एक ऐसी दुनिया में टिके हुए हैं जहाँ हर दूसरा देश महाशक्ति बनने का प्रयास कर रहा है। इस तरह की कार्रवाई के पीछे की व्याख्या बहुत सरल है – बढ़ती भेद्यता, उत्पीड़न और अत्याचार। परमाणु युग में, जहाँ सामूहिक विनाश और वैश्विक विनाश के लिए शक्तिशाली हथियारों का कब्जा है, गांधीजी का अहिंसा का दर्शन प्रासंगिकता प्राप्त कर रहा है। कभी–कभी क्रूरता और बर्बर कृत्यों के माध्यम से वर्चस्व का दावा करना समस्या का समाधान नहीं करता है, लेकिन यह टेबल वार्ता, चर्चा और शांति वार्ता है जो एक

बेहतर दुनिया का मार्ग प्रशस्त करती है और बदलाव लाती है। और यही कारण है कि कई शांति–निर्माण संगठन विश्व युद्ध के बजाय शविश्व शांतिश को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक स्तर पर काम कर रहे हैं।

जब युद्ध और क्रूर ताकतों के माध्यम से सब कुछ हल किया जा सकता है, तो कोई भी एक कमजोर बूढ़े व्यक्ति या उसके दर्शन का अनुसरण क्यों करेगा? क्योंकि उन्होंने हमारी नैतिकता की अपील की और लोगों को यह एहसास कराया कि जब आध्यात्मिक शक्ति खुद को स्थापित करती है, तो यह भौतिकवादी दुनिया के मूल्यों को शक्तिहीन बना देती है। 21वीं सदी में, आंख के बदले आंख कभी भी एक स्थायी और तर्कसंगत समाधान नहीं हो सकता क्योंकि इससे केवल विनाश का एक विशाल स्तर पैदा होगा जहां लोग, राज्य और देश किसी भी तरह से एक दूसरे के खिलाफ अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए सींग बांध लेंगे। समस्याओं से निपटने का गांधी का तरीका हमेशा अनोखा रहा, उन्होंने हमेशा सांप्रदायिक सद्भाव, अहिंसा, स्वतंत्रता और समानता से युक्त एक आदर्श समाज की तलाश की।

हालाँकि गांधीजी की कई मान्यताएँ अब पुरानी मानी जाती हैं, जैसा कि इस तथ्य से देखा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के युग में कोई भी गांधीजी के प्रतिष्ठित चरखे का उपयोग नहीं करता है और उपभोग के युग में आत्म–नियंत्रण का अभ्यास करने की बहुत कम संभावना है, हमें अहिंसा का पालन करने के इस विचार को नहीं भूलना चाहिए। वास्तव में, प्रत्येक देश के प्रत्येक निवासी को कम से कम अपने जीवन के तरीके में इस गुण को शामिल करने का प्रयास करना चाहिए जो अस्तित्व की एकमात्र संभावित कुंजी है। आधुनिक भारत के नागरिकों को अहिंसा मनगढ़ंत लग सकती है, लेकिन दुनिया भर के कई दार्शनिकों, विचारकों और बुद्धिजीवियों को लगता है कि अहिंसा का मार्ग महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है और दुनिया भर के देशों को शांति और प्रगति के मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन कर सकता है।

**"शांति का कोई रास्ता नहीं है, शांति ही रास्ता है।" – महात्मा गांधी**

वर्तमान विश्व एक अराजकता की स्थिति की ओर बढ़ रहा है इसमें संदेह नहीं है। आज शांतिपूर्ण विश्व समाज की स्थापना करना मानवीय अंतर्रात्मा की मूल आवश्यकता है। ऐसे में गाँधीजी के विचार इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होते है। गाँधी के आदर्शो पर यदि विश्व के विभिन्न राष्ट्र विचार करें और उन्हे व्यावहारिक रूप में अपनाये तो एक शांतिपूर्ण विश्व राजनीतिक समाज की संकल्पना सिद्ध हो सकती है।

## निष्कर्ष

गांधीजी के राजनीतिक विचार व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा पाते है और इन विचारों की प्रासंगिकता अभी भी बरकरार है। आज के दौर में जब समाज में कल्याणकारी आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, धोखा, चालाकी, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है तो समाज सहिष्णुता, प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्तृत करता जा रहा है। विश्व शक्तियाँ शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है। ऐसे में विश्व शांति की पुर्नस्थापना के लिये, मानवीय मूलों को पुन प्रतिष्ठित करने के लिये आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


- अगग्राल एस. एन., ''गाँधीवादी योजना के सिद्धांत'', शिवलाल अग्रवाल, आगरा, 2018
- बन्धोपाध्याय जे., ''सोशल एंड पॉलिटिकल थॉट ऑफ गाँधी'', एलाइड पब्लिशर, बॉम्बे, 2019
- बोदुराँ जान वी., ''कन्वेस्ट ऑफ वायलेसं द गाँधीयन फिलॉसफी कॉफिलिक्ट'', प्रिसंटन यूनिवर्सिटी, न्यूजर्सी, 2018
- बोस एन. के., ''स्टेडिज इन गाँधीज्म'', इंडियन एसोसियेटडे पब्लिशिंग कंपनी, कलकत्ता, 2017
- गौड़ वी. पी., ''महात्मा गाँधी, ए स्टडी ऑफ हिज मैसेज ऑफ नॉन वायलेसं'', स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2007
- धवन जी. एस., ''द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गाँधी'', नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1957
- धर्माधिकारी दादा, ''सर्वोदय दर्शन'', प्रगति प्रकाशन, नईदिल्ली, 1950
- एरिसन ई. एच., ''गाँधीज़ ट्रूथ : द ऑरिजन ऑफ मिलिटेन्ट नॉन वायलेसं'', डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉरटन एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1969
- फिशर एल., ''द लाईफ ऑफ महात्मा गाँधी'', हार्पर, न्यूयॉर्क, 1983
- गांगली बी. एन.,''गाँधीज सोशल फिलॉसफी पर्सपेक्टिव एंड रिलेवेन्स'', विकास पब्लिशिंग हाउस, न्यूयॉर्क, 1973
- गुप्ता एस. एन.,''द इकॉनॉमिक फिलॉस्फी ऑफ महात्मा गाँधी'', अशोक पब्लिशिंग हाउस, नईदिल्ली, 1968

- धर्माधिकारी दादा, '' सर्वोदय दर्शन'', अखिल भारतीय सर्व संघ, काशी, 1957
- धर्माधिकारी दादा, '' सर्वोदय दर्शन'', सस्ता साहित्य मंडल, नईदिल्ली, 1951
- धवन गोपीनाथ, '' सर्वोदय तत्व दर्शन'', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2013
- सिंह नारायण, ''मार्क्स और गाँधी का साम्यदर्शन'', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2015